

श्रद्धा गुप्ता
मुंबई

लघुकथा

कसक

सिग्नल पर बत्ती लाल हुयी। इधर हवा से बातें करते ऑटो रिक्शा को अचानक से ब्रेक लगा। न जाने कहीं से एक भिखारी रेंगता हुआ आया- फटे कपडे, गंदे बाल, एक हाथ टूटा हुआ , एक पैर मुड़ा हुआ और सुख के काँटा हो रखा शरीर। उसने सड़क किनारे बैठे हुए ही कुछ कहे बिना , बिना टूटा हाथ सवारी के सामने पसार दिया। उसकी हालत देखकर प्रवीण से रहा न गया। वह देने के लिए कुछ सिक्के ढूंढने लगा , पहले शर्ट की जेब , फिर अपने बटुए में। लेकिन सबसे छोटा एक बीस का नोट ही हाथ आया। बत्ती किसी भी पल हरी हो सकती थी। उसने बिना देर किये नोट उस पसरे हाथ पर रख दिया। उसका मन दया से भर आया था। ऐसी ठण्ड में , इतनी रात को सड़क पर भीख माँगना पड़ रही है।

बत्ती हरी हुयी। रिक्शा फिर उड़ने लगा। इधर उतनी ही गति से प्रवीण के मन में भी विचार आने लगे। वो बड़ी संतुष्टि का अनुभव कर रहा था। कि चलो, दिन ख़त्म होते होते एक अच्छा काम हो गया उससे। सिर्फ अपने लिए ही क्या जीना ! लाचार, बेसहारों की सहायता करते रहना चाहिए।

तभी रिक्शाचालक प्रवीण से बोला- सर , बुरा न मानियेगा पर आपको उसे रुपए नहीं देना चाहिए थे। मैं जब तक आपको रोक पाता आप रूपए दे चुके थे।

क्यों भाई , क्या हुआ ? - प्रवीण ने आश्चर्य से पूछा।

रिक्शाचालक ने किसी अनुभवी बुजुर्ग की तरह जवाब दिया। -

वो पैसा भिखारी की जेब में नहीं जायेगा। इनका एक सेठ होता है। जिसके आदमी फ्लाईओवर के नीचे घूमते रहते हैं। वो इनसे भीख मंगवाते हैं और इन पर नज़र रखते हैं। सारा पैसा वो लेकर अपने सेठ को दे देते हैं। इन्हें कुछ नहीं मिलता। इनकी हालत ऐसी ही रहती है।

अच्छा - प्रवीण ने अबकी बार शॉकेड होकर कहा।

बहुत बड़ा धंधा है साहब ये तो। हम तो रोज़ पूरा शहर घूमते हैं, रोज़ यहाँ से निकलते हैं, हमने तो सब देखा है। आप जैसे कई भलेमानुस जल्दी में होते हैं तो पैसा दे जाते हैं जो जाता उस बदमाश सेठ की पॉकेट में है।

प्रवीण को काटो तो खून नहीं। उसे लगा जैसे उसके साथ किसी ने बहुत बड़ा छल किया हो। चाहे ज़रूरतमंद के हाथों कितना भी पैसा चला जाए लेकिन गलत हाथ में तो एक रुपया भी नहीं जाना चाहिए वो भी लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ करके।

कुछ क्षण रुककर वह बोला- कोई बात नहीं भाई , मैंने तो अच्छे मन से दिया है बाकी उपरवाले की मर्ज़ी।

प्रवीण ने कह तो दिया लेकिन भीतर ही भीतर सच उसके मन को कसोट रहा था। वो सोच रहा था कि काश रिक्शवाले ने उसे सच न बताया होता।